



उ०प्र० कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक: ५०५ / एनआरएम/डब्ल्यूएसएलएएजी/पीएल/2021

दिनांक: 04.07.2024

दिनांक : 04 जुलाई, 2024
समय : 12:00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति : संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024-25 की नवी बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियों

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024-25 की नवी बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 04 जुलाई, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के राईस ब्रीडर; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; कृषि विभाग; उद्यान विभाग; पशुपालन विभाग; गन्ना विभाग; मत्स्य विभाग; उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ के प्रतिनिधि तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन व दलहन वैज्ञानिक तथा सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ के मौसम वैज्ञानिक द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

मानसून 2024 की प्रगति

- दक्षिण पश्चिमी मानसून ने 25 जून से उत्तर प्रदेश में आरंभ होकर 30 जून को सम्पूर्ण प्रदेश को आच्छादित कर लिया।

मौसम पूर्वानुमान (05 से 11 जुलाई, 2024)

- भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के दौरान भांभर तराई क्षेत्र के उत्तरी पश्चिमी भाग को छोड़कर प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। इस दौरान प्रदेश के अधिकतर भागों में मेघगर्जन एवं वज्रपात के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है। इस दौरान प्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायु अंचलों में कहीं-कहीं भारी से बहुत भारी वर्षा होने की भी संभावना है।
- इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के उत्तर-पूर्वी मैदानी, पूर्वी मैदानी एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भागों में औसत अधिकतम तापमान सामान्य अथवा सामान्य से आंशिक रूप से कम, जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से कम रहने की संभावना है।
- प्रदेश के भावर तराई एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा पश्चिमी मैदानी, मध्य मैदानी एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 30 से 32 डिग्री सेल्सियस; बुन्देलखण्ड एवं दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग में कुछ स्थानों पर यह 34-36 डिग्री सेल्सियस, जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 32 से 34 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

मानसून ऋतु (01 जून से 04 जुलाई, 2024) के दौरान उत्तर प्रदेश में 118 मि.मी. के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष कुल 121.8 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य से 3 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में 132.6 मि.मी. के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष 12 प्रतिशत कम कुल 117.1 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 97.5 मि.मी. के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष 32 प्रतिशत अधिक कुल 128.5 मि.मी. वर्षा दर्ज हुई। मानसून ऋतु के दौरान अभी तक प्रदेश के गोरखपुर जनपद में सर्वाधिक 306.1 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई।

कृषि विभाग से दिनांक 30 जून, 2024 तक प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार कुल खरीफ फसलों के लिये निर्धारित लक्ष्य 102.05 लाख हे. के सापेक्ष 13.42 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का 13.15

प्रतिशत है। अब तक धान की नर्सरी लक्ष्य 4.08 लाख हे. के सापेक्ष 3.89 लाख हे. में डाली जा चुकी है जो लक्ष्य का 95.32 प्रतिशत है। धान के लक्ष्य 61.24 लाख हे. के सापेक्ष 7.99 लाख हे. की पूर्ति की जा चुकी है जो लक्ष्य का 13.06 प्रतिशत है, मक्का फसल लक्ष्य 8.81 लाख हे. के सापेक्ष 2.53 लाख हे. की बुवाई, ज्वार में 2.99 लाख हे. के सापेक्ष 0.13 लाख हे. की बुवाई, बाजरे के लक्ष्य 10.61 लाख हे. के सापेक्ष 0.38 लाख हे., अरहर लक्ष्य 3.68 लाख हे. के सापेक्ष 0.35 लाख हे., उर्द के लक्ष्य 7.57 लाख हे. के सापेक्ष 1.21 लाख हे., मूंग लक्ष्य 0.05 लाख हे. के सापेक्ष 0.04 लाख हे., मूंगफली लक्ष्य 1.32 लाख हे. के सापेक्ष 0.27 लाख हे. तथा तिल लक्ष्य 4.25 लाख हे. के सापेक्ष 0.28 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- धान की तैयार पौध की रोपाई हेतु मौसम अनुकूल है अतः किसान भाई युद्धस्तर पर रोपाई करें। किसान भाई धान की कम अवधि की किस्मों की सीधी बुवाई ड्रम सीडर (खेत तैयार कर) अथवा सीड ड्रिल (सूखी बुवाई) से कर सकते हैं।
- खरीफ फसलों की बुवाई हेतु शोधित बीज का ही प्रयोग करें।
- रोपाई वाले खेत में एक फीट ऊँची मेड़ बनाएं ताकि वर्षा जल संचित कर लाभ लिया जा सके।
- धान की रोपाई के बाद जो पौधे मर गये हो उनके स्थान पर तीन से पाँच दिन के अन्दर दूसरे पौधों को तुरन्त लगा दें ताकि प्रति इकाई पौध सुनिश्चित की जा सके।
- अरहर एवं मक्का का अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु रिज और मेड़ बनाकर मेड़ों पर बुआई करें।
- सरकार की प्राथमिकताओं के दृष्टिगत “श्री अन्न” जैसे मक्का, ज्वार, बाजरा, रागी, सावां, कोदों आदि की खेती को महत्ता दी जाय। इन फसलों की खेती से मौसम के कुप्रभाव से भी बचाव किया जा सकता है।
- मानसून ऋतु में प्रदेश में तड़ित झंझावात के साथ वज्रपात की संभावना अधिक होती है अतः सभी किसान भाई इसकी समय से पूर्व चेतावनी प्राप्त करने के लिये अपने मोबाईल में दामिनी तथा सचेत ऐप डाउनलोड करें तथा इसके द्वारा प्राप्त होने वाले दिशा निर्देशों के अनुसार आवश्यक सावधानी बरतें, जिससे जान माल के नुकसान से बचा जा सकें।

धान की खेती

- धान की पौध की जड़ों को 5 ग्राम ट्राइकोडर्मा हारजियेनम 2 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर उपचारित करके रोपाई करने से रोगों का प्रकोप कम हो जाता है।
- यदि 20-25 दिन की पौध तैयार है तो धान की रोपाई 2-3 पौधा प्रति हिल एवं प्रति वर्ग मीटर 40 से 50 हिल को 3-4 सेमी. की गहराई पर रोपें। धान के पौध की चोटी ऊपर से एक इंच काटकर रोपाई करने से कीट एवं बीमारियों के प्रकोप की संभावना कम हो जाती है।
- ऊसर एवं बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में रोपाई 30 दिन की पौध होने पर ही करें।
- धान की “डबल रोपाई या सण्डा प्लान्टिंग” हेतु तीन सप्ताह की अवधि के पौधों की प्रथम रोपाई 20 x 10 से. मी. की दूरी पर करना सुनिश्चित करें।
- रोपाई के उपरान्त संकरी व चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु ब्यूटाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 3-4 लीटर, एनिलोफास 30 प्रतिशत ई.सी. 1.5 लीटर अथवा प्रोटिलाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 1.60 लीटर मात्रा प्रति हे., पाइराइजो सल्फ्यूराॉन इथाइल 10 प्रतिशत डबलू. पी. 0.15 कि.ग्रा. का लगभग 500 ली. पानी में घोलकर फ्लैटफैन नॉजिल से खेत में 2 इंच भरे पानी में रोपाई के 2-3 दिन के अन्दर छिड़काव करें।
- रोपाई किये गये धान में 15 से 21 दिन पर प्रथम बार यूरिया की टापड्रेसिंग करें।
- जून के प्रथम सप्ताह में बोये गये धान की सीधी बुवाई में खरपतवार की निराई करें।

मक्का की खेती

- पूर्व में बोये गये मक्के में जल निकासी की व्यवस्था करें।
- मक्का की शीघ्र पकने वाली संकर किस्मों जे.ए.-3459, प्रकाश, पूसा संकर मक्का-5, विवेक संकर मक्का-27, एम.एम.एच.-113, एक्स-1123 जी (3342) तथा संकुल किस्मों आजाद उत्तम, प्रगति, गौरव, कंचन, सूर्या तथा शियाट्स मक्का-2 की बुवाई मेड़ों पर करें।
- मक्के में फाल आर्मी वर्म का प्रकोप होने पर 10 से 20 प्रतिशत क्षति की अवस्था में प्रभावी नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. 0.4 मिली. प्रति लीटर पानी अथवा स्पाइनोसैड 0.3 मिली. प्रति

लीटर पानी अथवा थायामेथाक्सॉम 12.6 प्रतिशत+लैम्बडासाइहैलोथिन 9.5 प्रतिशत 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

श्री अन्न की खेती

- सावा की संस्तुत प्रजातियों यथा आई.पी.-149, यू.पी.टी.-8, आई.पी.एम.-97, आई.पी.एम.-100, आई.पी.एम.-148 व आई.पी.एम.-151 की बुआई करें।
- कोदों की संस्तुत प्रजातियों जे.के.-6, जे.के.-62, जे.के.-2, ए.पी.के.-1, जी.पी.वी.के.-3 की बुआई करें।
- ज्वार की संस्तुत संकुल प्रजातियों यथा वर्षा, सी.एस.वी.-13, सी.एस.वी.-15, एस.पी.बी.-1388 (बुन्देला), विजेता तथा संकर प्रजातियों सी.एस.एच.-16, सी.एस.एच.-9, सी.एस.एच.-14, सी.एस.एच.-18, सी.एस.एच.-13 व सी.एस.एच.-23 की बुआई करें।
- बजरा की उन्नतशील संकुल किस्मों यथा धनशक्ति, आई.सी.एम.बी.-155, डब्लू.सी.सी.-75, न.दे.पफ.बी.-3 (नरेन्द्र चारा बाजरा-3), राज-171 तथा संकुल किस्मों 86 एम. 84, आई.सी.एम.एच.-451, पूसा-322 तथा पूसा-23 की बुआई जुलाई के मध्य से करने हेतु बीज की व्यवस्था करें।

अरहर की खेती

- अरहर की दर से पकने वाली उन्नतशील किस्मों यथा नरेन्द्र अरहर 2, मालवीय चमत्कार, राजेन्द्र अरहर-2, मालवीय विकास, पूसा 9, आजाद, नरेन्द्र अरहर 1, अमर, बहार, आई.पी.ए.-206, पूसा अरहर 151 तथा आई.पी.ए.-15-2 की बुआई मेढों पर करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम, एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा + 1 ग्राम कार्बाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले हर बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

उर्द एवं मूंग की खेती

- उर्द की किस्मों आजाद उर्द-1, आजाद उर्द-2 (हरा दाना), शेखर-1, शेखर-2, आई.पी.यू.-94-1 (उत्तरा), टा-27 तथा टा-65, आईपीयू 11-02, आईपीयू 13-1, पंत उर्द-9, पंत उर्द-8, पंत उर्द-12 एवं मूंग की किस्मों नरेन्द्र मूंग-1, सम्राट, मालवीय जन चेतना, टी.एम.-9937, मालवीय जन कल्याणी, एम.एच.-215, आई.पी.एम. 2-3, श्वेता, स्वाति, विराट, आई.पी.एम. 2-14, आजाद मूंग-1, पूसा 14-31, मेहा 99-125, वर्षा, कनिका की बुआई करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बीज को 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 2.0 ग्रा. थीरम से प्रति कि.ग्रा. की दर से शोधित करने के बाद उर्द/मूंग के राइजोबियम कल्चर के एक पैकेट से 10 कि.ग्रा. बीज का उपचार करें।

लोबिया की खेती

- लोबिया की उन्नतशील किस्मों यथा पंत लोबिया-5, पंत लोबिया-3, पंत लोबिया-4, आर-101, जी.सी.-3 तथा आर-9 की बुआई करें।

तिल की खेती

- तिल की उन्नत किस्मों यथा गुजरात तिल-6, आर.टी.-346, आर.टी.-351, तरुण, प्रगति, शेखर, टा-78, टा-13, टा-12 तथा टा-4 बुआई करें।

सोयाबीन की खेती

- सोयाबीन की सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश हेतु संस्तुत उन्नत किस्मों यथा पी.के. 472, पी.एस. 564, पी.के. 416, पी.एस. 1024, पूसा-16, पी.एस.1042, जे.एस. 20-34, जे. एस. 20-98, पंत सोयाबीन-26, जवाहर सोयाबीन 20-116, बुंदेलखण्ड हेतु संस्तुत जी.एस.-2, जे.एस.-93-5, जे.एस.-72-44, जे.एस.-75-46, पूसा-20, जे.एस.-335, एम.ए.यू.एस.-47, एन.आर.सी.-37 तथा तराई क्षेत्र तथा भांभर क्षेत्र हेतु संस्तुत पी.के.-262 की बुआई करें।

मूंगफली की खेती

- मूंगफली की उन्नत किस्मों यथा जी.जे.जी.-9, जी.जे.जी.-31, दिव्या (सीएसएमजी-2003-19), अम्बर (सीएसएमजी-84-1), चित्रा (एम.ए.-10), कौशल, टी.जी.-37ए, टा-64, टा-28 तथा प्रकाश की बुआई करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम, एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा + 1 ग्राम कार्बाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले हर बीज को मूंगफली के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

गन्ना की खेती

- गन्ने को गिरने को बचाने एवं अवांछित कल्लों को निकलने से रोकने हेतु गन्ने की जड़ों पर यदि अभी तक मिट्टी नहीं चढ़ाई है तो अनुकूल मौसम होने पर मिट्टी चढ़ा दें।
- लालसड़न रोग के लक्षण गन्ने की पत्तियों की मध्य शिरा पर दिखने पर पौधों को उखाड़कर नष्ट कर दें। उखाड़े गये स्थान पर ब्लीचिंग पाऊडर का बुरकाव अथवा थायोफिनेटमेथिल 0.2 प्रतिशत की ड्रेचिंग करें।

- लालसड़न रोग से प्रभावित खेत में स्वस्थ पौधों पर थायोफिनेट मेथिल 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- गन्ना फसल हेतु अधिक हानिकारक चोटीबेधक कीट की तृतीय पीढ़ी से बचाव हेतु यदि अभी तक उपचार नहीं किया है तो क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.7 एस.सी. की 375 मि.ली. मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से गन्ने की लाईनों के पास डेचिंग करें।

सब्जियों की खेती

- लोबिया, करेला, लौकी, तोरिया, पेठा, भिण्डी, टमाटर, चौलाई और मूली की बुवाई कर सकते हैं।
- फूलगोभी की अगेती किस्मों अर्ली कुवारी, पूसा अर्ली सिंथेटिक, पंत गोभी-3, पूसा दीपाली आदि किस्मों का 500 से 600 ग्राम बीज प्रति हे. की दर से नर्सरी तैयार करें।
- भिण्डी की खरीफ में बुवाई हेतु मौसम अनुकूल है अतः संस्तुत किस्मों की बुवाई करें।
- खरीफ प्याज की नर्सरी तैयार करने के लिये पौधशाला में खरीफ प्याज की बुवाई करें तथा 1 हे. प्याज फसल के लिये 8 से 10 कि.ग्रा. बीज का प्रयोग करें।
- खरीफ ऋतु की अगेती सब्जियों के बीज को ट्राइकोडर्मा पाऊडर 5 से 6 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बुवाई करें।
- लोबिया की संस्तुत किस्मों के 15 से 20 कि.ग्रा. बीज प्रति हे. की दर से राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुवाई करें।
- बैंगन की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिये क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- पौधशाला हेतु ऊँचे एवं ढालू स्थान का चयन करें, जिससे वर्षा के पानी का निकास आसानी से हो सके। नर्सरी डालने के लिये 7.5 मी. लम्बा 1 मीटर चौड़ा और 10-15 से.मी. ऊँचा स्थान बनाना चाहिये।

बागवानी

- आम में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर ट्रेप 8-10 ट्रेप प्रति हे. में 6 से 8 फुट की ऊँचाई पर टहनियों में बांध कर लटकाये तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें तथा 20-25 दिन के अंतराल पर ल्योर को बदलते रहना चाहिये।
- केले के नवीन बाग लगाने हेतु उक्तक सर्वधित रोगरोधी जी-9 प्रजाति लगायें।
- फलों के बाग में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
- आम, अमरुद, लीची, आंवला, कटहल, नींबू, जामुन, बेर, केला, पतीता के पौधों का रोपण कर नये बाग लगायें।

पशुपालन

- वर्तमान में गलाघोटू बीमारी का 15 जुलाई तक निःशुल्क टीकाकरण चल रहा है। यह सुविधा पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- खुरपका एवं मुहपका (एफ.एम.डी.) बीमारी का 15 जुलाई से 30 अगस्त तक 60 जनपदों में तथा लम्पी त्वचा रोग का टीकाकरण 15 सितम्बर से प्रदेश के समस्त जनपदों में निःशुल्क चलाया जायेगा। इसके लिये दवाईयां पशु चिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध हैं।
- बकरी पालक कृत्रिम गर्भाधान हेतु पशुपालन विभाग से सम्पर्क करें।
- पशुओं को अंतः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सा की सलाह से आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।
- सभी पशुपालक/कृषक खेत की अच्छी तैयारी कर उन्नतशील किस्म के चारा बीज की बुवाई करायें। बीज पशुपालन विभाग के प्रक्षेत्रों से प्राप्त किया जा सकता है।

मत्स्य पालन

- कतला, रोहू, नैन, सिल्वर कार्प एवं ग्रास कार्प मत्स्य प्रजातियों का मत्स्य बीज वर्तमान में उ.प्र. मत्स्य विकास निगम व निजी क्षेत्र की हैचरियों पर उपलब्ध है अतः मत्स्य पालक जनपदीय कार्यालय से सम्पर्क कर मत्स्य बीज संचय करायें।
- मछलियों में वृद्धि हेतु पूरक आहार का प्रयोग मछलियों के वजन के 1 से 2 प्रतिशत तक किया जाय। मछलियों को निश्चित समय पर भोजन दिया जाय।
- जलाशय/नदियों में 31 अगस्त तक शिकारमाही प्रतिबंधित है।
- बरसात के मौसम में तालाब के जलीय पौधों का उन्मूलन करना आवश्यक है। यह पौधे तालाब में उपलब्ध पोषक तत्वों को शोषण करते हैं और मछलियों को मुक्त कराते हैं।
- तालाब में खाद का प्रयोग करें साथ ही साथ चूने का भी प्रयोग करें। चूना पोषक तत्व कैल्शियम उपलब्ध कराने के साथ जल की अम्लीयता पर नियंत्रण रखता है।
- थाई मॉगुर मछली पालना प्रतिबन्धित है। इसको न पाला जाये।

रेशम

- कृषकों द्वारा रोपित शहतूत एवं अर्जुन वृक्षारोपण में घास, खरपतवार की सफाई कर गुड़ाई का कार्य कर लें तथा एरी रेशम कीटपालन हेतु अरण्डी बीज की बुवाई करें।
- वृक्षारोपण में गैप फिलिंग का कार्य कर लें।
- शहतूती सेक्टर में मानसून सीड क्राप एवं टसर सेक्टर में अम्पतिया क्राप में कीटाणु उत्पादन प्रारंभ हो चुका है। इस हेतु समस्त आवश्यक तैयारियां यथा विशुद्धीकरण आदि की कार्यवाही तत्काल कर लें।
- वृक्षारोपण में गैप फिलिंग का कार्य कर लें।

वानिकी

- पौधशाला में अंकुरण क्यारियाँ तैयार कर आम, गुलमोहर, महुआ, कटहल, जामुन, कंजी, नीम आदि के बीजों की बुआई शीघ्र कर लें। अंकुरित पौधों को रूट ट्रेनर/थैलियों में प्रतिरोपित कर रख दें।
- खुले क्षेत्रों में रखे पौध को वृक्षारोपण क्षेत्र में ले जाने अथवा बेचने की कार्यवाही करें।
- वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर रोपण कार्य करें।
- पौधों के रोपण अथवा बिक्री हेतु ले जाने से पूर्व तक खुले क्षेत्र में रखें तथा 15 दिन पौधों को जमीन पर रखने के उपरांत ही रोपण करें।
- पौधों को रोपण से पहले सावधानीपूर्वक पालीथीन से निकालें तथा पिण्डी को टूटने न दें उसके उपरांत ही रोपण करें।

अन्य विशेष

वज्रपात (आकाशीय बिजली) हेतु सुरक्षा के उपाय

क्या करें

1. पक्की छत के नीचे शरण लें।
 2. यात्रा के दौरान वाहन में ही रहें।
 3. खिड़कियां दरवाजे एवं बरामदों से दूर रहें।
 4. बिजली के उपकरणों या तार के सम्पर्क में आने से बचें।
 5. तालाब और जलाशयों से दूर रहें।
- यदि आप खेत खलिहान में हैं तो पैरों के नीचे लकड़ी, प्लास्टिक, बोरा या सूखे पत्ते रखें।

क्या न करें

1. पेड़ के नीचे न खड़े हो।
2. दीवार के सहारे टेक न लगायें।
3. बिजली व टेलीफोन के खंभों के नीचे शरण न लें।
4. नल फ्रिज व टेलीफोन आदि को न छुयें।
5. धातु से बनी वस्तुओं का प्रयोग न करें।

सर्पदंश से बचाव हेतु सुरक्षा के उपाय

क्या करें

1. पीड़ित व्यक्ति को किसी भी प्रकार की शारीरिक क्रिया न करने दें।
2. व्यक्ति की घबराहट दूर करें। घबराहट से शरीर में जहर तेजी से फैलता है।
3. मरीज के घाव से छेड़-छाड़ न करें, उसे साबुन एवं पानी से धुलें।
4. घाव के आस पास से घड़ी, कड़ा, अंगूठी तुरंत उतार दें।
5. मरीज को अस्पताल ले जाय जल्दी ही एंटीवेनम दिया जाना चाहिये।

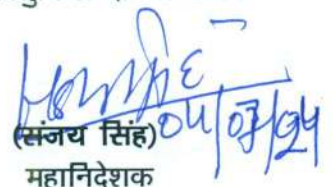
क्या न करें

1. सांप के जहर को कभी भी मुंह से चूसकर निकालने की कोशिश न करें।
2. बिना चिकित्सीय सलाह किसी भी प्रकार की दवा मरीज को न दें।
3. पीड़ित व्यक्ति के सर्पदंश वाले भाग पर किसी भी प्रकार का मलहम इत्यादि न लगायें।
4. सपेरे अथवा तांत्रिक के चक्कर में न पड़ें। सांप को मारने का प्रयास न करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनांक 11 जुलाई, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोट:- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाइट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।


(संजय सिंह)
महानिदेशक

प्रतिलिपि: उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफिसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, सै. हिमगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेंगे।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिमगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेक्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।

42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
47. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
48. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।


(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राफ वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024-25 की नवी बैठक
दिनांक 04 जुलाई, 2024 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार, लखनऊ
2. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ
3. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ
4. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उपकार, लखनऊ।
5. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ
6. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
7. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
8. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र, पशुपालन, उत्तर प्रदेश
9. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
10. श्री सत्यभान सिंह, उपकृषि निदेशक, कृषि विभाग, लखनऊ।
11. श्री सत्येन्द्र यादव, वरिष्ठ मत्स्य निरीक्षक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
12. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
13. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राफ रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
14. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
15. प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ।
16. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
17. डा. यू.पी. शाही, प्राध्यापक मृदा विज्ञान एवं प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस)सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ (ऑनलाइन)।
18. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट्रोआबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।